The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4, January-2025
www.theresearchdialogue.com

"गरीबी निवारण में वनोंपज की भूमिका : छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष सन्दर्भ में"

सुधीर कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय,
वाड्रफनगर, जिला–बलरामपुर (छ.ग.)

शोध सार

छत्तीसगढ़ राज्य को भारत का 'धान का कटोरा' कहा जाता है, परन्तु यह राज्य केवल कृषि आधारित नहीं है, बल्कि यहाँ की विशाल जनसंख्या वनों और वनोंपज पर भी निर्भर है। राज्य का लगभग 44% भाग वन क्षेत्र से आच्छादित है, और यहां की आदिवासी जनसंख्या, जो कुल जनसंख्या का एक तिहाई से अधिक है, वनों के संसाधनों पर जीवनयापन करती है। इस परिप्रेक्ष्य में वनोंपज की भूमिका गरीबी निवारण, आजीविका सुरक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सतत विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। विशेष रूप से लघु वनोपज (Minor Forest Produce – MFP), जैसे कि तेंदूपत्ता, साल बीज, चार, महुआ, हर्रा, बहेरा, इमली, गोंद इत्यादि, ग्रामीण व आदिवासी समुदायों की आजीविका का प्रमुख स्रोत हैं।

मुख्य शब्द : वनोंपज की भूमिका, गरीबी निवारण, वन सम्पदा, विपिणन, वन उत्पाद, न्यूतम समर्थन मूल्य

वनोंपज का स्वरूप और विविधता

छत्तीसगढ़ के वनों में पाए जाने वाले लघु वनोपजों की विविधता अत्यंत समृद्ध है। यहाँ वर्ष भर अलग–अलग मौसम में विभिन्न वनोपज एकत्र किए जाते हैं, जिनमें औषधीय पौधे, खाद्य फल, बीज, पत्तियाँ, रेजिन, गोंद, जड़ें और फूल शामिल हैं। महुआ फूल और बीज से जहाँ पारंपरिक खाद्य और तेल निकलता है, वहीं साल बीज, चार बीज और करंज बीज जैसे उत्पादों से तेल निकालकर ग्रामीण लोग अतिरिक्त आय अर्जित करते हैं।

वनोपज की इस विविधता का एक आर्थिक मूल्य भी है, जो बाजार में ग्रामीणों को आय का स्रोत प्रदान करती है। यह न केवल नकद आय उपलब्ध कराता है, बल्कि स्थानीय स्तर पर स्वावलंबन और पारंपरिक ज्ञान की निरंतरता को भी प्रोत्साहित करता है।

गरीबी निवारण में वनोंपज का महत्व

गरीबी निवारण में वनोंपज का महत्व अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ जनसंख्या का बड़ा हिस्सा वनों पर निर्भर है। भारत के वनवासी और आदिवासी बहुल क्षेत्रों, जैसे कि छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और मध्यप्रदेश में वनोंपज न केवल जीवनयापन का साधन है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा का मजबूत आधार भी प्रदान करता है। वनोंपज, विशेषकर लघु वनोपज (Minor Forest Produce – MFP), जैसे तेंदूपत्ता, महुआ, साल बीज, चार, इमली, गोंद, हर्रा, बहेरा, और औषधीय पौधे, ग्रामीणों को बिना पूंजी निवेश के आय का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे अपनी बुनियादी जरूरतें पूरी कर पाते हैं और अत्यंत गरीबी से बाहर निकलने की दिशा में कदम बढ़ाते हैं। यह संसाधन न केवल प्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करता है, बल्कि स्थानीय बाजार से जुड़कर आय के स्रोत को स्थायित्व भी प्रदान करता है। वनोंपज का संग्रहण, प्रसंस्करण और विपणन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाता है और विशेष रूप से महिलाओं तथा कमजोर तबकों को आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करता है। इसके अतिरिक्त, वनोंपज आधारित आजीविका स्थानीय पारंपरिक ज्ञान, पर्यावरणीय संरक्षण और सामुदायिक भागीदारी को भी सशक्त बनाती है, जिससे सतत विकास के लक्ष्य को साकार किया जा सकता है। यदि सरकारें वनोंपज को संगठित बाजार, न्यूनतम समर्थन मूल्य, प्रसंस्करण केंद्रों और सहकारी समितियों से जोड़ें, तो यह गरीबी उन्मूलन का एक शक्तिशाली औजार सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार, वनोंपज न केवल एक प्राकृतिक संपदा है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता की दिशा में एक मजबूत कड़ी भी है।

छत्तीसगढ़ राज्य की वन संपदा और आर्थिक स्थिति

छत्तीसगढ़ भारत के मध्य–पूर्व में स्थित एक प्रमुख राज्य है, जो अपनी समृद्ध वन संपदा और खनिज संसाधनों के लिए जाना जाता है। राज्य का लगभग 44 प्रतिशत भूभाग वनाच्छादित है, जो इसे देश के सबसे वन–समृद्ध राज्यों में से एक बनाता है। यहाँ के वनों में साल, सागौन, बांस, तेंदू, महुआ, हर्रा, बहेरा, चार, इमली, गोंद जैसे अनेक लघु वनोपज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जिन पर लाखों ग्रामीणों और आदिवासियों की आजीविका निर्भर करती है। वन क्षेत्रों में रहने वाली बड़ी आबादी वनोंपज संग्रहण, शिकार, औषधीय पौधों और लकड़ी के उपयोग के माध्यम से पारंपरिक जीवनशैली जीती है।

आर्थिक रूप से छत्तीसगढ़ एक खनिज और औद्योगिक राज्य है, जहाँ लौह अयस्क, कोयला, बॉक्साइट, डोलोमाइट आदि खनिजों की भरपूर उपलब्धता है। साथ ही, यह राज्य विद्युत उत्पादन, इस्पात निर्माण, और धान उत्पादन के क्षेत्र में भी अग्रणी है। हालांकि खनिज और उद्योगों से राजस्व प्राप्त होता है, राज्य की बड़ी ग्रामीण और आदिवासी आबादी अब भी गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा जैसी चुनौतियों से जूझ रही है। ऐसे में वन आधारित आजीविका, विशेष रूप से वनोंपज, ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है, जो न केवल रोजगार देती है, बल्कि सतत विकास और गरीबी उन्मूलन में भी सहायक सिद्ध होती है।

छत्तीसगढ़ में पाए जाने वाले प्रमुख वन उत्पाद

छत्तीसगढ़ राज्य वन संसाधनों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है और यहाँ अनेक प्रकार के वन उत्पाद विशेष रूप से लघु वनोपज बड़ी मात्रा में पाए जाते हैं, जो लाखों ग्रामीणों और आदिवासियों की आजीविका का

आधार हैं। राज्य में पाए जाने वाले प्रमुख वन उत्पादों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है – लघु वनोपज (गैर–काष्ठीय उत्पाद) और काष्ठीय वन उत्पाद।

1. लघु वनोपज (Non-Timber Forest Produce & NTFP)

छत्तीसगढ़ में सबसे अधिक महत्व इन्हीं उत्पादों का है, जो सीधे आदिवासी समुदायों की आर्थिक सुरक्षा से जुड़े हैं। प्रमुख लघु वनोपज इस प्रकार हैं–

- **तेंदूपत्ता** : बीड़ी बनाने के लिए उपयोगी पत्ता; सबसे बड़ा व्यापारिक वनोपज।
- **महुआ फूल और बीज** : खाद्य, पेय और तेल उत्पादन के लिए उपयोगी।
- **साल बीज** : इससे तेल निकाला जाता है, जो औद्योगिक उपयोग में लाया जाता है।
- **चार बीज** : चार तेल के लिए उपयोगी, त्वचा रोगों की औषधियों में प्रयोग।
- **गोंद (कटकू, धावड़ा, गोंद बबूल)** : खाद्य, औषधीय और औद्योगिक उपयोग में।
- **हर्रा, बहेरा, आंवला** ' त्रिफला के रूप में प्रसिद्ध औषधीय फल।
- **इमली** : खाद्य उपयोग में और बाजार में उच्च मांग।
- **लाह (लाख)** : प्राकृतिक रेजिन, जिसका उपयोग चूड़ी, पॉलिश आदि में होता है।
- **कुसुम, करंज, नीम बीज** : जैविक कीटनाशक और औषधीय तेलों के स्रोत।
- **बहेड़ा, बेल, सौंफ, सपफेद मूसली, गिलोय, नागरमोथा, सतावर आदि** – औषधीय पौधों की विविधता।

2. काष्ठीय वन उत्पाद (Timber Forest Produce)

हालांकि लघु वनोपज का अधिक सामाजिक–आर्थिक महत्व है, फिर भी काष्ठीय उत्पादों की भी भूमिका है–

- **साल** : सबसे प्रमुख वृक्ष, मजबूत लकड़ी के लिए प्रसिद्ध।
- **सागौन** : मूल्यवान लकड़ी, फर्नीचर निर्माण में उपयोग।
- **बांस** : निर्माण, हस्तशिल्प और कागज उद्योग में उपयोग।
- **सरई, बीजा, हल्दू, अर्जुन** : विविध निर्माण और औषधीय उपयोग।

छत्तीसगढ़ सरकार ने इन वनोंपजों के संग्रहण, प्रसंस्करण और विपणन को संगठित करने के लिए छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ का गठन किया है, जो इन उत्पादों को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदता है और इससे लाखों आदिवासी परिवारों को लाभ होता है। इन वनोंपजों की सही उपयोगिता गरीबी निवारण, महिला सशक्तिकरण और सतत विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

छत्तीसगढ़ में वन आधारित अर्थव्यवस्था

छत्तीसगढ़ जैसे वन बहुल राज्य में वनोंपज का आदिवासी एवं ग्रामीण समुदायों के लिए आजीविका के मुख्य स्रोत के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ की बड़ी आबादी वनों से सटे क्षेत्रों में निवास करती है और पारंपरिक रूप से जंगलों पर निर्भर रही है। वनोंपज, विशेषकर लघु वनोपज, इन समुदायों को

जीवन–निर्वाह का सीधा और सुलभ माध्यम प्रदान करते हैं। इन उत्पादों में तेंदूपत्ता, महुआ, साल बीज, चार, गोंद, हर्रा, बहेरा, इमली, औषधीय जड़ी–बूटियाँ और बांस जैसे उत्पाद प्रमुख हैं, जिन्हें ग्रामीण बिना किसी बड़ी पूंजी के जंगलों से एकत्र करते हैं और बाजार या सरकारी समितियों को बेचकर आय अर्जित करते हैं।

यह प्रणाली वर्ष के अलग–अलग मौसमों में विभिन्न वनोंपज के संग्रहण द्वारा ग्रामीणों को निरंतर आजीविका देती है। उदाहरण के लिए, गर्मियों में तेंदूपत्ता, वर्षा ऋतु में महुआ और सर्दियों में हर्रा–बहेरा का संग्रह होता है। यह मौसमी विविधता एक सतत आय सुनिश्चित करती है। महिलाओं की इसमें विशेष भागीदारी होती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उनका योगदान भी सशक्त होता है। वनोंपज आधारित कार्य ग्रामीणों को प्रवास के विकल्प से बचाता है और स्थानीय स्तर पर ही रोजगार सृजित करता है।

इसके अतिरिक्त, वनोंपज का प्रसंस्करण जैसे– महुआ से तेल निकालना, गोंद को सुखाकर पैक करना, इमली की गुठली अलग करनाकृइन सभी गतिविधियों से मूल्य संवर्धन होता है और ग्रामीणों को अधिक लाभ मिलता है। अनेक सहकारी समितियाँ, स्वयं सहायता समूह (SHGs) और राज्य सरकार की योजनाएँ, जैसे न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना, इन समुदायों को संगठित रूप से बाजार तक पहुँचाने में मदद करती हैं।

इस प्रकार वनोंपज न केवल इन समुदायों की जीविका का आधार है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक परंपराओं, सामाजिक संरचना और पारिस्थितिकी के साथ संतुलित जीवनशैली का एक अभिन्न अंग भी है। यदि इस संसाधन का संरक्षण, संवर्धन और बाजारीकरण उचित रूप से किया जाए, तो यह लाखों आदिवासी और ग्रामीण परिवारों को गरीबी से बाहर निकालने का एक प्रभावी साधन बन सकता है।

राज्य सरकार द्वारा वनोंपज संग्रहण एवं विपणन हेतु नीतियाँ

छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने वनोंपज के संग्रहण एवं विपणन को एक संगठित, पारदर्शी और लाभकारी प्रणाली में परिवर्तित करने हेतु अनेक प्रभावशाली नीतियाँ एवं योजनाएँ बनाई हैं, ताकि आदिवासी एवं ग्रामीण समुदायों को उनके परिश्रम का उचित मूल्य मिल सके तथा उनकी आजीविका में स्थायित्व और वृद्धि हो सके। वनोंपज के क्षेत्र में नीति निर्माण का मुख्य उद्देश्य यह है कि जंगलों में रहने वाले लोगों को वन संसाधनों से आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से जोड़कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ लिमिटेड (CGMFP–Federation) का गठन, जो राज्य स्तर पर लघु वनोपज के संग्रहण, मूल्य निर्धारण, भंडारण, प्रसंस्करण और विपणन की पूरी प्रणाली को नियंत्रित करता है। यह संघ आदिवासी सहकारी समितियों के माध्यम से सीधे संग्रहकों से लघु वनोपज खरीदता है, जिससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त होती है और संग्रहकों को उचित मूल्य प्राप्त होता है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) योजना का कार्यान्वयन केंद्र सरकार की मदद से राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है, जिसके तहत चयनित वनोंपजों की न्यूनतम कीमत तय की जाती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि वन उत्पादों के दाम बाजार में गिरने पर भी संग्रहकों को न्यूनतम आय प्राप्त हो। छत्तीसगढ़ डैच् योजना के प्रभावी क्रियान्वयन में देश के अग्रणी राज्यों में गिना जाता है।

इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार ने वैल्यू एडिशन और प्रोसेसिंग यूनिट्स की स्थापना को भी प्रोत्साहित किया है, ताकि स्थानीय स्तर पर वनोंपजों का प्रसंस्करण हो और ग्रामीणों को अधिक लाभ मिल सके। उदाहरणस्वरूप, महुआ लड्डू, तेंदूपत्ता बीड़ी, साल बीज तेल, इमली कैंडी आदि उत्पाद स्थानीय समूहों द्वारा तैयार किए जा रहे हैं, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाते हैं।

सरकार द्वारा "वन धन विकास केंद्र" (VDVK) की स्थापना भी की गई है, जो जनजातीय मामलों के मंत्रालय और ट्राइफेड के सहयोग से संचालित होते हैं। इन केंद्रों में वनोंपज संग्रहण, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग से संबंधित प्रशिक्षण एवं उपकरण दिए जाते हैं, जिससे ग्रामीण समुदायों को उद्यमिता की दिशा में बढ़ावा मिलता है।

इसके अलावा, सरकार ने डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं ई–मार्केटिंग को भी अपनाया है ताकि वनोंपजों की पहुँच व्यापक बाजार तक हो सके और संग्रहकों को उनके उत्पादों का बेहतर मूल्य प्राप्त हो। सहकारी समितियों और स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाना, ग्राम वनोपज समितियों का गठन, पारदर्शी लेखा प्रणाली, महिला भागीदारी में वृद्धि, और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण जैसे पहलुओं को भी नीतियों में विशेष स्थान दिया गया है।

इस प्रकार छत्तीसगढ़ सरकार की वनोंपज नीति न केवल आर्थिक रूप से कारगर है, बल्कि यह सामाजिक समावेश, ग्रामीण सशक्तिकरण और पर्यावरणीय संरक्षण का संतुलित मॉडल भी प्रस्तुत करती है, जो गरीबी उन्मूलन की दिशा में एक प्रभावशाली माध्यम बन चुकी है।

छत्तीसगढ़ सरकार की पहल

वन धन योजना एवं अन्य संबंधित योजनाएँ छत्तीसगढ़ राज्य में वनों पर निर्भर आदिवासी एवं ग्रामीण समुदायों की आजीविका को सशक्त बनाने हेतु अत्यंत प्रभावशाली पहल हैं, जो वनोंपज आधारित अर्थव्यवस्था को संगठित, लाभकारी और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वर्ष 2018 में भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा ट्राइफेड (TRIFED) के माध्यम से प्रारंभ की गई वन धन योजना का मुख्य उद्देश्य यह है कि वनों में पाई जाने वाली लघु वनोपज का संग्रहण करने वाले आदिवासी केवल कच्चे माल के विक्रेता न बनें, बल्कि उन्हें वनोंपज के प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग और विपणन की जानकारी एवं संसाधन उपलब्ध कराकर उन्हें उद्यमी के रूप में विकसित किया जाए। इस योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में अनेक वन धन विकास केंद्र (VDVK) स्थापित किए गए हैं, जहाँ स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को संगठित कर उन्हें प्रशिक्षण, उपकरण और विपणन सुविधा प्रदान की जाती है, जिससे वे महुआ लड्डू, इमली कैंडी, साल बीज तेल, गोंद पाउडर आदि जैसे उत्पाद स्थानीय स्तर पर बना सकें और अधिक लाभ प्राप्त कर सकें।

इससे आदिवासी समुदायों की आय में 2 से 3 गुना तक वृद्धि हुई है और उनका जीवन स्तर सुधरा है। इसके साथ ही न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) योजना भी राज्य में प्रभावी रूप से लागू की गई है, जिसके तहत चयनित लघु वनोपजों की राज्य सरकार द्वारा निर्धारित दर पर प्रत्यक्ष खरीद की जाती है, जिससे बाजार मूल्य घटने पर भी संग्रहकों को आर्थिक नुकसान न हो। छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ

इस पूरी प्रणाली को सहकारी समितियों के माध्यम से संचालित करता है, जो संग्रहकों को पारदर्शी भुगतान, बोनस वितरण और विपणन सहायता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, महिला वन उत्पाद प्रसंस्करण योजना, प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना (PMFME) और Tribes India ई–मार्केटिंग पोर्टल जैसी योजनाएँ भी वनोंपज आधारित उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुँचाने में सहायक हो रही हैं। इन योजनाओं के माध्यम से आदिवासियों को केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि एक गरिमापूर्ण, आत्मनिर्भर और पर्यावरण–सम्मत जीवनशैली की ओर उन्मुख किया जा रहा है, जिससे गरीबी उन्मूलन, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समावेशन की दिशा में ठोस प्रगति हो रही है।

न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) योजना की भूमिका

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2013 में वनोंपजों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना प्रारंभ की गई थी, जिसे छत्तीसगढ़ राज्य ने प्रभावी रूप में लागू किया है। वर्तमान में 65 से अधिक लघु वनोपजों को इस योजना में शामिल किया गया है, जिनमें से कई उत्पाद छत्तीसगढ़ में बड़े पैमाने पर एकत्र किए जाते हैं।

इस योजना के तहत आदिवासियों को वनोंपज के लिए सुनिश्चित मूल्य मिलना प्रारंभ हुआ, जिससे उनका शोषण कम हुआ और उनकी आय में वृद्धि हुई। यह योजना गरीबी उन्मूलन की दिशा में मील का पत्थर साबित हुई है, क्योंकि इससे ग्रामीणों की आर्थिक सुरक्षा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

सहकारी समितियाँ और महिला सशक्तिकरण

छत्तीसगढ़ में वनोंपज प्रबंधन में सहकारी समितियों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्राम वन समितियाँ, वन सुरक्षा समितियाँ और स्वयं सहायता समूह (SHGs) वनोंपज संग्रहण और विक्रय में सक्रिय हैं। इन समितियों में महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय है।

महिलाएं महुआ बीनने, इमली सुखाने, बीज साफ करने, गोंद संग्रहण जैसी गतिविधियों में सक्रिय रहती हैं। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है, बल्कि उन्हें सामाजिक मान्यता और आत्मसम्मान भी प्राप्त होता है। यह महिला सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन लाता है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी और विपणन सुधार

छत्तीसगढ़ में 'ट्राइफेड' और 'वन धन योजना' के तहत डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से वनोंपज विपणन को बढ़ावा दिया जा रहा है। ऑनलाइन पोर्टलों और मोबाइल एप्स के माध्यम से अब उत्पादकों और खरीदारों के बीच सीधा संपर्क संभव हो गया है, जिससे पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धात्मक मूल्य सुनिश्चित होते हैं।

'वन धन विकास केंद्रों' के माध्यम से स्थानीय स्तर पर संग्रहण, प्रसंस्करण और विपणन की व्यवस्था की गई है, जिससे ग्रामीणों की भागीदारी और लाभांश में वृद्धि हुई है।

निष्कष

वनोंपज न केवल आर्थिक संसाधन है, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक और पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ में इसकी प्रभावी भूमिका से लाखों लोग गरीबी के जाल से बाहर निकलने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। यदि नीतिगत रूप से उचित दिशा में प्रयास किए जाएं, तो वनोंपज आधारित अर्थव्यवस्था छत्तीसगढ़ के लिए आत्मनिर्भरता और समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- डॉ. डी.सी. पंत – भारत में ग्रामीण विकास, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 1998
- डॉ. हीरालाल – जनसंख्या भूगोल के मूल तत्व, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 2003
- योजना मासिक पत्रिका : भारत सरकार ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली 2012
- कुरूक्षत्र मासिक पत्रिका : ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली 2012
- गुप्ता और शिवभूषण : कृषि अर्थशास्त्र, एसबीपीडी पब्लिसिंग हाउस, आगरा, 2010
- कृष्णमोहन पाण्डेय (2016): वन संसाधन और उनके आर्थिक प्रभाव, भारत में वनोंपज का योगदान, दिल्ली : प्रकाशन विभाग।
- भारत सरकार (2020) : वन धन योजना, एक समीक्षा रिपोर्ट. जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार।
- नरेंद्र कुमार शर्मा (2018): छत्तीसगढ़ में आदिवासी समाज और वनोंपज का आर्थिक महत्व. रायपुर, छत्तीसगढ़ विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- छत्तीसगढ़ राज्य सरकार (2019) : वनोंपज विपणन नीति और न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना, रायपुर, छत्तीसगढ़ राज्य वन विभाग।
- सारिका शर्मा (2017) : आदिवासी समुदाय और वनोंपज, छत्तीसगढ़ का परिप्रेक्ष्य. बस्तर विश्वविद्यालय शोध पत्रिका।
- सुरेश कुमार पाटिल (2020) : छत्तीसगढ़ राज्य में वनोंपज आधारित लघु उद्योगों का विकास, रायपुर, विकास पुस्तकालय।

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4, January -2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number Jon.-2025/28
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सुधीर कुमार सिंह

for publication of research paper title

"गरीबी निवारण में वनोंपज की भूमिका : छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष सन्दर्भ में"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-04, Month January, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY